रामायण विशारद
**डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा**
एम. ए., पी-एच. डी.,
(विद्यावाचस्पति), आयुर्वेदरत्न, योगाचार्य
पूर्व अध्यक्ष, दर्शन विभाग एवं
पूर्व निदेशक, युवक कल्याण विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
पूर्व सदस्य, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद्

अमोलक राम कालोनी (गली -2)
कृष्णा नगर गामड़ी रोड
कुरुक्षेत्र - 136118
दूरभाष - 01744-291903
मोबाईल - 08053049390
तिथि ...12...7...2015

# मानवता के सजग प्रहरी श्री मूलचन्द जैन

**डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा**
पूर्व अध्यक्ष, दर्शन विभाग,
कु.वि कुरुक्षेत्र

हरियाणा के इतिहास पटल पर अपनी कीर्ति, सादगी तथा ईमानदारी की छाप छोड़ने वाले हरियाणा के पूर्व वित्तमंत्री श्रद्धेय श्री मूल चन्द जैन एक ऐसी विभूति हैं, जिनका हृदय मानव कल्याण तथा राष्ट्रभक्ति के भाव से ओत-प्रोत रहा है। वह ऐसे असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्ति थे जो अपने समाजवादी विचारों और शोषितों के हितैषी के रूप में विख्यात हैं। जैन साहब न केवल देश की स्वतंत्रता के निर्भीक सेनानी रहे, अपितु स्वतंत्रता के पश्चात् भी राष्ट्र निर्माण तथा लोक कल्याण और श्रमिक वर्ग के उत्थान के कार्यों में नि:स्वार्थ भाव से सक्रिय योगदान देते रहे।

श्री जैन साहब की सुपुत्री डॉ. स्वतंत्र जैन मेरे साथ ही मनोविज्ञान विभाग की शिक्षिका रहीं। बहुत विदूषी, श्रद्धावान परन्तु अन्याय और शोषण के विरुद्ध निर्भय होकर खड़ी रहने वाली महिला मानी जाती थीं। यह सारे गुण उनको पिता से ही संस्कारों में प्राप्त हुए थे, उनके माध्यम से मुझे माननीय श्री जैन साहब का शुभ आशीर्वाद मिलता रहता था। परन्तु जैन साहब को बहुत

निकट से देखने का सौभाग्य भारत रत्न श्री गुलजारी लाल नन्दा के सान्निध्य में होने के कारण प्राप्त हुआ। वह श्री गुलजारी लाल नन्दा से बहुत निकटता से जुड़े हुए थे। दोनों सच्चे अर्थों में गांधीवादी थे। दोनों तप, त्याग तथा समाजवाद की मूर्ति थे। श्रमिकों, मेहनतकशों तथा मज़दूर-कामगारों के प्रति दोनों के हृदय में वेदना थी, सहानुभूति थी। दोनों ही दिखावे और आडम्बरवाद के खिलाफ थे। इसलिए दोनों जब मिल कर बैठते थे तो यही चर्चा चलती थी कि शोषित वर्ग को कैसे ऊपर उठाया जाए तथा समाज में फैली कुरीतियों तथा दुराचार को कैसे समाप्त किया जाए। मैं नन्दा जी के आरम्भ से ही निकट रहा जब कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड का गठन हुआ, 1968 में तभी से मैं बोर्ड की गतिविधियों विशेषकर धार्मिक सम्मेलनों के तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से जुड़ा रहा था इसलिए जब भी श्री जैन साहब आते तो उनसे विचार विमर्श करने का सौभाग्य मिलता रहा।

धार्मिक दृष्टि से श्री जैन जी बहुत ही उदार थे। वह कहते थे कि हवन का हो या चिता का हो, धुएं का रंग एक है। इस प्रकार हिन्दू का हो या मुस्लिम का हो, लहू का रंग एक है। वह हरिवंश राय बच्चन की इस पंक्ति से सहमत थरे कि 'लड़वाते हैं मन्दिर-मस्जिद' संकुचित दृष्टि घृणा तथा द्वेष को जन्म देती है। इसलिए इससे ऊपर उठकर सब मानव एक ही हैं। मानवता ही सच्चा धर्म है। उनका सिद्धान्त था कि दुखियों की, गरीबों की, उपेक्षित वर्ग की देखभाल करो, उनको सुखी बनाने के लिए कार्य करो, यही सच्ची पूजा है और यही सच्चा धर्म है। वह वित्तमंत्री रहते हुए इन्हीं के कल्याण की योजनाएं बनाते रहे।

श्री जैन जी पाखण्डवाद तथा मिथ्या कर्मकाण्ड के बहुत विरोधी थे। ग्रहों का भय दिखाकर लोगों की जेब पर डाका डालने वालों को वह दुष्ट ग्रहों का शनीचर, राहु इत्यादि का दलाल कहा करते थे। पहले यह दलाल आतंक फैला देते हैं। शनीचर तेरे घर को तबाह कर देगा, वास्तु तेरे घरवालों को खा जाएगा फिर कहते हैं लाओ इतनी दलाली हमें दे दे। हम उन

ग्रहों से सौदा कर लेंगेकि वह आपको तंग न करें। श्री जैन जी कहते थे कि अपने पूज्य पिता के चरणों की पूजा करो तो सूर्य की ग्रह दशा टल जाएगी क्योंकि पिता देवता हैं। उनके चरणों का तेज सूर्य के तेज से अधिक है। अपनी माता के चरणों में नमन करो, चन्द्रमा की ग्रह दशा तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी क्योंकि मातृ देवो भव। माता के चरणों की इतनी शीतलता है कि वह सारे तापों का हरण कर लेगी। गुरुओं से आशीर्वाद लो तो कोई दुष्ट शक्ति आपको सता नहीं सकती क्योंकि गुरु तो साक्षात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश है। उनसे महान कोई ब्रह्माण्ड में ही शक्ति नहीं है। पाखण्ड में मत फंसो, शुभ कर्म करो और किसी से मत डरो।

एक बार थानेसर नगर की पुरानी सब्जी मण्डी के हनुमान मन्दिर में विशाल कार्यक्रम का आयोजन हो रहा था। यह मन्दिर बहुत छोटा-सा था। इसका जीर्णोद्धार करके भव्य भवन का निर्माण कराया गया था। उसका उद्घाटन कार्यक्रम था। मैंने जैन साहब से निवेदन किया कि वह नवनिर्मित भवन का उद्घाटन अपने करकमलों से करने की कृपा करें। वह कहने लगे, मैं इन कर्मकाण्डों और मूर्तिपूजा में आस्था नहीं रखता। मैंने कहा जिन्होंने यह जीर्णोद्धार कराया है, उनको आशीर्वाद ही दे देना। जैन साहब तैयार हो गए। जब मन्दिर में पहुँचे तो उन्होंने कहा हनुमान तो बहुत शक्तिशाली थे, ऐसे ही आप बनो। उन्होंने राम की सेवा की और बदले में कुछ नहीं मांगा, ऐसे ही निःस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करने का गुण अपने अन्दर लाओ तभी हनुमान जी की सच्ची पूजा होगी। उसके बाद उन्होंने कहा कि अच्छा यह बताओ कि हम में से कितने लोग हनुमान जी से यह मांगने आए हैं कि हे हनुमान जी हमें आप इतनी शक्ति दे दो कि आज दुकान पर बैठकर नम्बर दो का माल न बेचें, गन्दी और मिलावट की चीज़ें ग्राहकों को भिड़ा कर उनकी जेब न काटें, बेइमानी से लोगों को न ठगें, हेराफेरी करके तथा नकली दूध, घी, दवाएँ आदि बेचकर लोगों को न लूटें, जो ईमानदारी से कमाई हो उसी में सन्तोष करें, जिन्होंने यह शक्ति मांगी है, वह हाथ ऊंचा करें। एक भी हाथ ऊंचा नहीं हुआ तो जैन साहब बड़े स्पष्ट शब्दों में कहने लगे कि हम इसलिए आए हैं कि हनुमान जी हम ने कल तक जो पापाचार से काली कमाई की थी उसमें यह 21/- या 51/- रुपये

आप का हिस्सा है। अब और अधिक बेइमानी करने की शक्ति दो, इस काम के लिए मैं आशीर्वाद नहीं दे सकता और उठ कर मंच से जाने लगे तब मन्दिर समिति तथा व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने निवेदन किया कि आज तक किसी सन्त-महात्मा ने इतनी ज्ञान की बातें कहीं और न ऐसी सदाचार की प्रेरणा दी, अब आप अपने मुख से यह प्रतिज्ञा करवाइए। इसके बाद ही जैन साहब ने सबको आशीर्वाद दिया। ऐसी एक नहीं अनेकों घटनाएँ उनके जीवन से जुड़ी हैं जहाँ उन्होंने लोगों को सच्चे धर्म का पाठ पढ़ाया है।

श्री जैन साहब जैन धर्म के सिद्धान्तों से संस्कारित थे इसलिए उन्होंने अपने जीवन में अपरिग्रह के अणु व्रत को धारण किया था और आजीवन उसका पालन किया। वह कहा करते थे कि परिग्रह अर्थात समाज में सम्मान पूर्वक अपना जीवन, परिवार पालन तथा सामाजिक दायित्वों के निर्वाह के लिए जितने साधन, सामग्री तथा धन की आवश्यता है, उससे अधिक संग्रह करने की वृत्ति ही सारी हिंसा, द्वेष और विध्वंस का कारण है। मैं दूसरों का खून चूसकर भाई-भाई का धन अपहरण करने के लिए उनको कत्ल भी करा सकता हूँ। सारे दुराचार का कारण यह परिग्रह है। अपार धन संग्रह के लोभ में व्यक्ति अपना सम्मान, अपनी बहू-बेटियों की इज़्ज़त और यहाँ तक कि अपना धर्म, ईमान भी बेच देता है। जैन साहब ने अपरिग्रह को ही जीवन आदर्श बनाया। मंत्री होते हुए भी सरकारी जमीनें हड़प करने की बात कभी नहीं सोची। नाजायज तरीके से समाज को लूट कर अपनी तिजौरियां नहीं भरीं। आवश्यकता से अधिक साधन तथा धन संचय करने वाले समाज के चोर हैं। यह समाजवाद का सिद्धान्त है जिसका जैन साहब ने पालन किया। बड़ा सादा जीवन बिताकर जनता को बताया कि ईमानदारी तथा अपरिग्रह से कैसे जीवन जिया जा सकता है। उनका समाजवाद मार्क्सवादी हिंसा पर आधारित नहीं था अपितु गांधीवादी त्याग पर आधारित रहा।

आज समाज को इसी प्रकार के सिद्धान्तवादी तथा समाज सुधारक विभूतियों की आवश्यकता है। श्री मूलचन्द जैन ने अपने जीवन के उदाहरणों द्वारा यही सन्देश दिया है कि मानवता की पूजा गरीबों तथा उपेक्षित वर्ग का कल्याण और परिश्रम की कमाई से अपना भाग्य बनाने वाले मज़दूर वर्ग के उत्थान की बात करना ही सच्चा मानव धर्म है। अपरिग्रह के मार्ग से त्याग तथा समाज में सामाजिक न्याय की स्थापना करना ही उनके जीवन का उच्च आदर्श रहा है जिसको उन्होंने अपने व्यवहार से प्रतिपादित किया है, उन्हें मेरा नमन है।

( हिम्मत सिंह सिन्हा )